दशक भर बाद अमरेंद्र बाहुबली एक बार फिर दर्शकों का दिल जीतने लौट रहे हैं। 'बाहुबली: द इटरनल वॉर' का ट्रेलर रिलीज हो चुका है और एस.एस. राजामौली अब अपनी इस एपिक कहानी को नए अंदाज में, एनिमेशन के जरिए आगे बढ़ाने वाले हैं। 2015 की फिल्म बाहुबली में अमरेंद्र की मौत ने दर्शकों को झकझोर दिया था, लेकिन राजामौली की इस दुनिया में उनकी कहानी खत्म नहीं हुई, बल्कि अब एक नया सफर शुरू हो रहा है।

-फीचर डेस्क

एनिमेशन अवतार में होगी बाहुबली की वापसी

थिएटर्स में मिला सरप्राइज, अब आया ट्रेलर

बाहुबली के 10 साल पूरे होने पर राजामौली ने अपनी दोनों फिल्मों को जोड़कर 31 अक्टूबर को 'बाहुबलीः द एपिक' नाम से रिलीज किया था। यही फिल्म जब दोबारा थिएटर्स में लगी, तो दर्शकों को बड़ा सरप्राइज मिला। फिल्म की स्क्रीनिंग के साथ 'बाहुबलीः द इटरनल वॉर' का टीजर दिखाया गया। अब यह टीजर और ट्रेलर आधिकारिक तौर पर रिलीज हो चुके हैं और इंटरनेट पर खूब चर्चा बटोर रहे हैं।

मौत के बाद देवलोक की यात्रा

इस नई कहानी की शुरुआत वहीं से होती है, जहां अमरेंद्र की जिंदगी खत्म हुई थी। ट्रेलर दिखाता है कि अमरेंद्र की आत्मा देवलोक पहुंचती है और यहीं से देवासुर संग्राम में उसकी भूमिका शुरू होती है। विषासुर और इंद्र के बीच छिड़े इस युद्ध में जब विषासुर कमजोर पड़ता दिखाई देता है, तब अमरेंद्र बाहुबली की एंट्री होती है- भगवान शिव के आशीर्वाद के साथ। रथ पर उनका आगमन और विशाल शिवलिंग के सामने उनकी नटराज मुद्रा, टीजर का हर फ्रेम एनिमेशन प्रेमियों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

गजब का एनिमेशन, इंटरनेशनल लेवल की क्वालिटी

'द इटरनल वॉर' की सबसे बड़ी ताकत इसका अनोखा एनिमेशन स्टाइल है। यह श्री डी नहीं है, लेकिन इसकी विजुअल क्वॉलिटी की तुलना आर्केन और स्पाइडरमैनः इन्टू द स्पाइडरवर्स जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट्स से की जा रही है। इंडियन माइथोलॉजी का एहसास और उसका आधुनिक प्रेजेंटेशन दोनों मिलकर इसे और भी दिलचस्प बनाते हैं। बैकग्राउंड स्कोर इसे एक ग्रैंड एक्सपीरियंस में बदल देता है।

रिलीज डेट और आगे की तैयारी

'बाहुबलीः द इटरनल वॉर' दो पार्ट्स में बनेगी और इसका पहला पार्ट 2027 में रिलीज होगा। दर्शकों को अभी थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा, लेकिन ट्रेलर यह वादा तो कर ही देता है कि बाहुबली की दुनिया पहले से कहीं ज्यादा भव्य रूप में वापसी कर रही है।

इंटरनेशनल कोलेबोरेशन और टैलेंटेड डायरेक्टर

राजमौली इस प्रोजेक्ट के प्रेजेंटर हैं और उन्होंने बताया है कि इसे बनाने के लिए कई प्रसिद्ध इंटरनेशनल स्टूडियोज के साथ हाथ मिलाया गया है। फिल्म के डायरेक्टर ईशान शुक्ला पहले ही इंटरनेशनल एनीमेशन कम्युनिटी में अपनी पहचान बना चुके हैं। उनकी डेब्यू शॉर्ट फिल्म अवॉर्ड विनिंग थी और वे स्टार वॉर्सः विजंस का एक एपिसोड भी डायरेक्ट कर चुके हैं। ट्रेलर देखकर साफ लगता है कि वे भारतीय दर्शकों के लिए एक रूटेड, विजुअली शानदार एनिमेशन दुनिया लेकर आ रहे हैं।

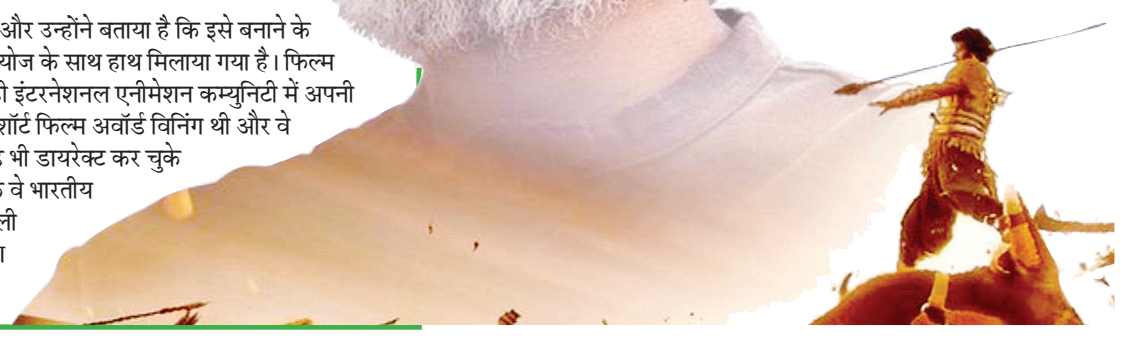

इमोशंस और प्यार तलाशता है टिल का सिनेमा

जर्मन सिनेमा के सबसे प्रमुख और लोकप्रिय चेहरों में से एक टिल श्वाइगर (Til Schweiger) एक अभिनेता, निर्देशक, पटकथा, लेखक और निर्माता के रूप में अपनी बहुमुखी प्रतिभा के लिए जाने जाते हैं। 19 दिसंबर, 1963 को फ्रीबर्ग में जन्मे, श्वाइगर ने दशकों तक फैले अपने करियर में न केवल जर्मनी में, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी एक महत्वपूर्ण प्रभाव छोड़ा है।

श्वाइगर के करियर की शुरुआत 1990 के दशक में हुई, लेकिन 1997 की फिल्म "नॉकिन' ऑन हेवन 'स डोर" ने उन्हें बड़ी सफलता दिलाई। इस फिल्म ने, जिसे उन्होंने सह-लिखा और सह-निर्मित किया, उन्हें व्यापक पहचान दिलाई और अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोहों में पुरस्कार जीते। यह उनके करियर में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने उन्हें सिर्फ एक अभिनेता से कहीं अधिक स्थापित किया। उनकी अभिनय शैली अक्सर एक निश्चित आकर्षण और कठोरता का मिश्रण होती है, जो उन्हें एक्शन भूमिकाओं से लेकर रोमांटिक कॉमेडी तक में विश्वसनीय बनाती है। उन्होंने हॉलीवुड फिल्मों में भी काम किया है, जिसमें "यू-571", "लारा क्रॉफ्ट : टॉम्ब रेडर- द क्रेडल ऑफ लाइफ" और विशेष रूप से क्वेंटिन टारेंटिनो की "इंग्लोरियस बास्टर्ड्स" शामिल है, जिसमें 'द बेयर यहूदी' की उनकी भूमिका को खूब सराहा गया। हालांकि जर्मनी में उनकी सबसे बड़ी लोकप्रियता उनकी निर्देशित फिल्मों से आती है। "हेड-ऑन" जैसी समीक्षकों द्वारा प्रशंसित फिल्मों के बाद, उन्होंने रोमांटिक कॉमेडी की ओर रुख किया और "फोर लव्ड वन्स", "रैबिट विदाउट ईयर्स" और इसकी अगली कड़ी जैसी जबरदस्त हिट फिल्में दीं। ये फिल्में अक्सर उनके व्यक्तिगत जीवन से प्रेरित होती थीं और इनमें उनके अपने बच्चे भी अभिनय करते थे। इन फिल्मों ने उन्हें जर्मनी के सबसे सफल निर्देशकों में से एक बना दिया, जिनकी फिल्में बॉक्स ऑफिस पर रिकॉर्ड तोड़ती थीं।

श्वाइगर का सिनेमा अक्सर मानवीय भावनाओं, पारिवारिक बंधनों और प्यार की खोज पर केंद्रित होता है। उनकी फिल्मों की अक्सर आलोचना की जाती है कि वे बहुत अधिक "मुख्यधारा" या भावुक होती हैं, लेकिन उनकी व्यावसायिक सफलता उनकी लोकप्रियता को दर्शाती है।

ऊपर आका, नीचे काका

जिंदगी का सफर

एक बार सलमान खान ने कहा था कि राजेश खन्ना जैसा स्टारडम कभी किसी का नहीं रहा। यकीनन राजेश खन्ना अपने जीवन में ही मिथ बन गए थे। भारतीय सिनेमा के इतिहास में अगर किसी अभिनेता को 'सुपरस्टार' की उपाधि सबसे पहले मिली, तो वह निस्संदेह राजेश खन्ना ही थे। उनका असली नाम जतिन खन्ना था। उनका जन्म 29 दिसंबर 1942 को अमृतसर, पंजाब में हुआ। उन्हें उनके रिश्तेदार चुन्नीलाल खन्ना और लीलावती खन्ना ने गोद लिया और उनका बचपन मुंबई में बीता। मुंबई के गिरगांव में पले-बढ़े जतिन ने सेंट सेबेस्टियन स्कूल में पढ़ाई की, जहां जीतेंद्र उनके सहपाठी थे।

अभिनय के जुनून ने राजेश खन्ना को 1965 के ऑल इंडिया टैलेंट कॉन्टेस्ट में जीत दिलाई, जिसने उनके लिए बॉलीवुड के दरवाजे खोल दिए। उन्होंने 1966 में फिल्म 'आखिरी खत' से अपने करियर की शुरुआत की। हालांकि उन्हें 1969 की फिल्म 'आराधना' से मिली जबरदस्त सफलता ने रातों-रात स्टार बना दिया। इस फिल्म में शर्मिला टैगोर के साथ उनकी जोड़ी और एसडी बर्मन का संगीत, विशेष रूप से 'मेरे सपनों की रानी' गीत, चार्टबस्टर बन गए। आराधना की सफलता ने एक ऐसे दौर की शुरुआत की, जिसे 'राजेश खन्ना युग' कहा जाता है। 1969 से 1972 के बीच उन्होंने लगातार 15 सोलो सुपरहिट फिल्में देने का एक अभूतपूर्व रिकॉर्ड बनाया, जो आज तक कोई नहीं तोड़ पाया। इस सुनहरे दौर ने उन्हें 'काका' का लोकप्रिय नाम दिया। उनकी अभूतपूर्व सफलता की वजह से उन दिनों एक मुहावरा चल निकला था, 'ऊपर आका, नीचे काका'। उनकी लोकप्रियता पागलपन की हद तक थी। महिला प्रशंसक उन्हें खून से खत लिखती थीं, उनकी कार को लिपस्टिक से चूमकर लाल कर देती थीं।

राजेश खन्ना अपनी सहज अभिनय शैली और संवाद अदायगी के लिए जाने जाते थे। उन्होंने विभिन्न शैलियों की फिल्मों में काम किया। उनकी कुछ सबसे यादगार फिल्मों में 'आनंद' (जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का फिल्मफेयर पुरस्कार मिला), 'कटी पतंग', 'अमर प्रेम', 'सफर', 'बावर्ची', 'खामोशी', 'सौतन' और 'नमक हराम' शामिल हैं। उनकी फिल्मों का संगीत हमेशा हिट रहा, जिसमें किशोर कुमार की आवाज ने चार चांद लगा दिए।

1973 में राजेश खन्ना ने अपने से बहुत छोटी नवोदित अभिनेत्री डिंपल कपाड़िया से शादी कर ली। उनकी दो बेटियां हुईं, ट्विंकल खन्ना और रिंकी खन्ना। हालांकि

1982 में उनके रिश्ते में दरार आ गई और वे अलग रहने लगे। अभिनय के अलावा, राजेश खन्ना ने राजनीति में भी हाथ आजमाया। वह कांग्रेस पार्टी के सदस्य बने और 1991 से 1996 तक नई दिल्ली से लोकसभा सांसद के रूप में कार्य किया। अपने जीवन के अंतिम वर्षों में राजेश खन्ना कैंसर से जूझ रहे थे। 18 जुलाई 2012 को 69 वर्ष की आयु में अंतिम सांस ली। भले ही बाद में अमिताभ बच्चन और अन्य सितारों ने लोकप्रियता के नए कीर्तिमान स्थापित किए, लेकिन राजेश खन्ना का 'पहला सुपरस्टार' का दर्जा हमेशा अमर रहेगा। 2013 में उन्हें मरणोपरांत पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। भारतीय सिनेमा में उनका योगदान और उनका स्टारडम हमेशा याद किया जाएगा।

मॉडल आफ द वीक

नाम: श्रेया मेहरोत्रा

टाउन: कानपुर

एजूकेशन: स्नातक (एनआईएफटी)

अचीवमेंट: मिस इंडिया 2020 एंड एआई डॉयेक्टर - गूगल पार्टनर

ड्रीम: बॉलीवुड एक्टर शाहरुख खान और अमेरिकी सिंगर कैटी पैरी के साथ काम करना।